

## पद २८५

(राग: बागेश्री बहार – ताल: त्रिताल)

निंदिया मा दरस माको दीनुवा । ना जानू मोहे का कीनुवा बालमा  
ये आज भईलुवा ॥ध्रु.॥ छब देखत ही मै तो सुद हारी । धन तन  
मन जीवन सब वारी ॥१॥ टुक देख अपनो करलीना । चित्त उचक  
बावर कर दीना ॥२॥ ऐसो मोहन दूजो नहीं माई । अलबेला यहि  
मानिक सांई ॥३॥